विश्व में घटनेवाली सभी घटनाएं तथा परिवर्तन चक्रीय है

यह एक शाश्वत सिध्धांत है

बी.के.प्रफुलचंद्र शाह (म) 982589271

हमारे शास्त्रों के अनुसार, विश्व की पुरातन संस्कृतियों के अनुसार तथा आज के ज़माने के शेक्सपियर जैसे साहित्यकार और तत्वज्ञानी के मत अनुसार समग्र विश्व एक बेहद का नाटक है,जिसमें सौर-मंडल का यह ग्रह रंगमंच है| इस बेहद के नाटक में हम सब मनुष्य आत्माएं एक्टर हैं तथा सभी धर्म की आत्माओं का परमपिता परमात्मा डायरेक्टर हैं| प्रत्येक आत्मा अपना अपना निश्चित किया हुआ पार्ट प्ले कर रही है| इस नाटक के अंतर्गत अनेक क्षेत्रों में विभिन्न गतिविधियाँ चल रही हैं| अनेक घटनाएं घटती रहती हैं तथा अनेक परिवर्तन भी होते रहते हैं| बहुत अच्छी तरह से चलनेवाली सब गतिविधियों तथा परिवर्तनों के ऊपर नियंत्रण के लिए तथा उसके व्यवस्थित संचालन के लिए कई सारे निश्चित सिध्धांतों का होना अति आवश्यक है| यह विश्वनाटक कोई आकस्मिक, अनियमित वा बेतरतीब नहीं हो सकता| पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेला जा रहा यह नाटक अनेक शाश्वत सिध्धांतों पर चल रहा है| इस में विश्वनाटक का चक्रीय परिवर्तन का सिध्धांत (Law of Cyclic Transformation of World Drama) एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसको आज का आधुनिक विज्ञानं भी समर्थन देता है|

इस सिध्धांत के अनुसार इस अनादि-अविनाशी विश्व नाटक में घटनेवाली सभी घटनाएं तथा परिवर्तन चक्रीय हैं| यह विश्व नाटक एक चक्र के स्वरूप में अनादि समय से चलता आया है और अनंत काल तक चलता रहेगा| उसमें होनेवाले सभी परिवर्तन एक ताल (Rhythm) के रूप में चलते रहते हैं| खुद समय भी एक चक्र के रूपमें चलता रहता है| इसलिए हम समय के लिए ‘काल चक्र’ शब्द का प्रयोग करते है| भौतिक विज्ञानं की द्रष्टि से किसी भी पदार्थ की सापेक्ष (relative) गति सुरेख (सीधी रेखा) में हो सकती है, लेकिन सभी पदार्थोंकी निरपेक्ष (absolute) गति तो भ्रमण (rotation) अथवा परिभ्रमण (revolution) की ही होती है| विज्ञान कहता है कि इस विश्व में कोई भी परिवर्तनशील प्रक्रिया यदि अनादि समय से चली आ रही है और उसे अनंत काल तक चलते रहना है तो यह परिवर्तन चक्रिय होना जरुरी है, नहीं तो वह अनंत काल तक नहीं चल सकता है|

विश्व के प्रतिष्ठित तत्वज्ञानियों तथा वैज्ञानिकों ने विश्व के बारे में उनके अध्ययन तथा चिंतन के बाद स्पष्ट रूप से दिखाया है कि इस विश्व में जो कोई घटनाएं घट रही हैं, जो कुछ चल रहा है, बन रहा है अथवा जो भी कोई भौतिक तथा आधिभौतिक प्रक्रियाएं चल रही है, वे सब चक्रीय हैं और प्रत्येक का एक आवर्तनकाल वा अवधि होती है| कई तत्वचिंतकों ने ऐसी भी बात कही है कि इस विश्व में सबकुछ कंपन अथवा दोलन की स्थिति है (Everything in the world is vibrating or oscillating) कंपन अथवा दोलन एक चक्रीय प्रक्रिया है|

इसमें कुछ उल्लेखनीय चक्र हैं: दिन और रत का चक्र जिसकी अवधि 24 घंटे की है (period of Repetition); 365 दिन का ऋतिओं का चक्र (सर्दी, गर्मी, बारिश का

मौसम); जन्म-मृत्यु और पुनर्जन्म का चक्र ; बिज में से वृक्ष और वृक्ष में से बीज का चक्र ; मुर्गी में से अंडा और अंडे में से मुर्गी का चक्र | उसी तरह सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग का एक बृहद विश्वनाटक का चक्र, जिसका आवर्तन काल ५००० वर्ष है| ऐसे तो अनेक चक्रों का वर्णन कर सकते हैं| ऊपर बताए चक्रों के संबंध में अगर कोई पूछे कि दिन पहले या रात, वृक्ष पहले या बीज, पहले जन्म या पहले मृत्यु तो इसका उत्तर किसी के पास नहीं है, क्योंकि ये चक्र अनादि काल से चलते आऐ हैं और अनंत समय तक चलते रहेंगे| यह दुनिया स्वयं ही कारण और उससे उत्पन्न होनेवाले प्रभाव का एक चक्र है| 5000वर्ष के इस विश्वनाटक का अनंतबार पुनरावर्तन हो चूका है तथा अनंतबार पुनरावर्तन होता रहेगा | अर्थात यह सृष्टिरूपी नाटक स्वयं ही एक बेहद की अवधिवाला चक्र है| इसके अंतर्गत छोटे-छोटे अवधिवाले अनेक चक्र चलते रहते हैं और उसका पुनरावर्तन होता रहता हैं|

गणितशास्त्र में ज्यामिति (Geometry) के दो चित्रों का उदहारण लेकर विचार करें: एक रेखा (line) और दूसरा वृत (circle) | रेखा के दो छोर होते हैं| यदि एक छोर को आदि मानें तो दुसरे छोर को अंत कहेंगे अर्थात जिसका आदि है, उसका अंत भी है| लेकिन हमारे बनाए वृत को देखें तो हम नहीं कह सकते हैं कि उसकी शुरुआत कहाँ है और उसका अंत कहाँ | अर्थात चक्र के रूपमें घुमती प्रक्रिया अनादि अनंत ही हो सकती है|

इसके अलावा आधुनिक विज्ञानं के दो महत्वपूर्ण सिध्धांत हैं: (1) न्युटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम (Newton's law of Gravitation) और आइन्स्टाइन का सापेक्षवाद (Einstein Theory of Relativity) इन दोनों के आधार पर यह बात अब साबित हो चूकी है कि इस विश्व में कुछ भी स्थिर नहीं है, सब कुछ गतिशील है और यह सब गतिशील प्रक्रियाएं चक्रीय हैं| एक समय ऐसा था कि कई चिन्तक समय को रैखिक (linear) मानते थे, लेकिन उपरोक्त सिध्धांतों के आधार पर अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि समय स्वयं रैखिक नहीं है, लेकिन चक्रीय है (Time is not linear, but it is cyclic). विश्व में चलनेवाली सभी भौतिक तथा आधिभौतिक क्रियाएं समय के आधीन हैं| यदि समय स्वयं ही चक्रीय हो तो प्रत्येक क्रिया भी चक्रीय ही होनी चाहिए|

फोरियर नामका एक महान गणितज्ञ था| मूल रूप से वह एक नाविक था| समुद्र की उछलती लहरों से उसने प्रेरणा लेकर यह सिध्ध किया कि दुनिया में अस्त-व्यस्त (random) दिखनेवाली कई प्रणालियां तथा प्रक्रियाएं अंत में तो विभिन्न आवृतियों (Periodic Time) तथा कंप विस्तार (Amplitude) वाली अनेक चक्रीय प्रक्रियाओं का एकीकरण (conglomeration) है अर्थात दुनिया में हो रहा हर परिवर्तन चक्रीय हैं|

आर्य संस्कृति और बौध्ध धर्म वाले भी स्पष्ट रूप से मानते हैं कि समय सिर्फ एक चक्र की तरह वृत में गति करता है और आगे बढ़ता है, लेकिन वही का वही समय फिर से वापस आता है| इस विश्व नाटक में हर कालका पुनरावर्तन होता है(History repeat itself)| गीता में भी कहा है कि

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् |

हेतुनानैत कौन्तेय जगर्विपरिवर्तते ||

(अध्याय-९, श्लोक-१०)

अर्थात, 'हे कौन्तेय, मेरी देख-रेख में जड़ तथा चैतन्य प्रकृति परिवर्तन होती है| इसी कारण से ही सृष्टि की उत्पत्ति और विनाश का चक्र सदा काल के लिए घूमते रहता है|

सर्वभूतानी कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्

कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृज्याम्यहम्

(अध्याय-९, श्लोक- ७)

अर्थात ‘हे कौन्तेय, कल्प के अंत में सभी प्राणी मेरी प्रकृति में प्रवेश कर समा जाते हैं और बाद में कल्प का आरंभ होते ही मैं सबका मेरी शक्ति से फिर से नवसर्जन करता हूँ|

गीता में विश्व नाटक के इस विशाल चक्र का उल्लेख कल्प के रूप में किया गया है, जिसके दो भाग का उल्लेख ब्रह्मा के दिन तथा ब्रह्मा की रात के रुप में किया गया है| यह बेहद का चक्र अनादि समय से घूमता आया है और अनंत काल तक घूमता रहेगा|

अध्यात्म विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय भी, उसके द्वारा किए गए अध्ययन तथा संशोधन के आधार पर, यह स्पष्ट रूप से मानता है कि यह विश्व नाटक अनादि अविनाशी है| इस विश्व में होनेवाले सभी परिवर्तन चक्रीय हैं और इन परिवर्तनों का हुबहू पुनरावर्तन (exact repetetion) होता है| वर्तमान समय इस सृष्टिचक्र के कलियुग के अंतिम समय तथा सतयुग के आदि के बिच का संगमयुग चल रहा है| इस समय परमात्मा, उनके ही गीता में दिए गए वचन अनुसार, अवतरित होकर पुरानी कलियुगी दुनिया का विसर्जन और नई सतयुगी दुनिया का नवसर्जन, ज्ञान तथा योग की शिक्षा द्वारा, करा रहे हैं| विश्व के चक्रीय परिवर्तन के नियम अनुसार नजदीक के भविष्य में अमरभूमि भारत में सतयुग का सुनहरा सूर्योदय होगा, यह निश्चित है|

-------ॐ शांति------